Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

कलाकार और श्रोता: एक स्वरानुबंध

DR. GITALI S. PANDE

Principal (I/C), Kala Mahavidyalay Malkapur, Akola, SGB Amaravati University, Amravati

सारांश

संगीत सबको आनंद देने वाली, मन को रिझाने वाली एक श्रेष्ठतम प्रस्तुतीपरक श्राव्य कला है जो कान से होते हुए सीधे दिल को छू जाती है | संगीत यह निश्चितरुपसे आनंदप्र दायक कला है ,लेकिन यह आनंद श्रोताओंके संगीत संबंधित ज्ञान से जुडा है| श्रोता का संगीत संबंधित ज्ञान जितना गहन, विस्तृत होगा, उसे उतना अधिक आनंद संगीत श्रवण से प्राप्त होगा। इसके परिणाम स्वरूप कलाकार और श्रोता के बीच एक स्वर- संवाद स्थापित होता है। कलाकार और श्रोता के बीच अच्छा स्वर- संवाद स्थापित होने के लिए, कलाकार की प्रस्तुती का निरामय आनंद लेने के लिए श्रोता की क्या भूमिका होनी चाहिये इस बात की चर्चा प्रधान रूप से प्रस्तुत शोधपत्र में की है।

संकेत शब्द : कलाकार, श्रोता, स्वर-संवाद

प्रस्तावना

पद्मविभूषण डॉ. प्रभा अत्रे जी वर्तमान समय की शास्त्रीय संगीत जगत की एक ज्येष्ठ, श्रेष्ठ तथा बहुआयामी प्रतिभावान कलाकार है| अपने समय की विज्ञान तथा कानून की उपाधीयाँ उन्होने प्राप्त की है। इस तरह एक आधुनिक शिक्षा प्राप्त कलाकार होने के कारण उन्होने संगीत को खुले दिमाग से सोचा तथा प्रस्तुत भी किया। इतना ही नही बल्की अपने विचारों को शब्दबद्ध करके किताबों के माध्यम से सबके सामने भी रखा। अपने सांगीतिक विचार लिखित रूप में सबके सामने रखने के पीछे एक महत्त्वपूर्ण कारण यह भी है कि, श्रोता की संगीत की समझ, जानकारी अधिक बढ़नी चाहिये; जिससे उसे संगीत का, संगीत श्रवण का अधिक आनंद मिल सके; क्यों कि किसी भी संगीत महफिलका श्रोता एक अविभाज्य घटक होता है। श्रोता के बिना संगीत की महफिल अधुरी होती है। कलाकार का प्रस्तुतीकरण तथा श्रोता का आकलन जब समान उँचाई पर होता है , तभी श्रोता और कलाकार के बीच स्वर- संवाद स्थापित होता है। श्रोता और कलाकार के बिच स्वर- संवाद स्थापित हो सके, ऐसा हर कलाकार चाहता है; तथा श्रोता को भी प्रस्तुतीकरण से आनंद की ही अपेक्षा रहती है। किसी भी प्रस्तुतीकरण का यश-अपयश इस पर ही निर्भर होता है।

उद्देश्य

वर्तमान समय में तकनीकी विकास के कारण कलाकार और श्रोता के बीच की दूरी बढ़ गई है। इंटरनेट पर संगीत भरपूर मात्रा में उपलब्ध होने के कारण श्रोता उसीसे ही अधिकतर संगीत का श्रवण करता है, संगीत सीखता है। इस माध्यमसे भी श्रवणानंद जरूर मिलता है, परंतु जब आप सामने बैठकर गाना सुनते है, तो आप उस प्रस्तुतीकरण का हिस्सा बन जाते है। उस प्रस्तुती के साथ आप सर्वांग से घुलमिल जाते है। उस वातावरण में एकरूप हो जाते है। उससे जो आनंद कलाकार तथा श्रोता को मिलता है वह सही मायने मे सांगितिक अनुभव है। जैसे खुद कश्मीर जाकर वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव करना तथा किसी फिल्म मे कश्मीर का प्राकृतिक सौंदर्य देखना इन दोनो बातों में फरक है; उसी प्रकार प्रस्तुतीकरण में संगीत सुनना तथा रिकॉर्ड किया हुआ संगीत सुनना इन दोनो बातो में फर्क है।

आज जानकार श्रोताओं की संख्या बहुत कम हो रही है। कलाकारों को श्रोताओं की रुचीके अनुसार गाना पडता है। जिससे कलाकार की प्रयोगशीलता पर मर्यादा आती है। कभी कभी कला का स्तर भी कम होता दिखाई देता है। किसी भी बात का आनंद अगर गहराई से लिया जाये, तो वह अधिक समय तक लाभदायक होता है। प्रत्येक मनुष्य आनंद पाने की कोशिश में कार्यमग्न रहता है। एक समझदार, जानकार श्रोता बनकर अगर संगीत का आनंद हम ले सके तो वो आनंद हमें उर्जा प्रदान करता है|

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

इसी कारण जानकार श्रोता बनना आवश्यक हैं। जानकार, समझदार श्रोता बनने से स्वयं श्रोताको , कलाकारको साथ में संगीतक्षेत्र को भी लाभ पहुँच सकता है। इसलिये इन सब बातों पर थोडा़ प्रकाश डालने हेतू इस विषय का चयन किया है।

विषय प्रवेश

पद्मविभूषण डॉ. प्रभा अत्रे जी ने गायिका, लेखिका, कवियत्री, व्याख्याता, कार्यकारी निर्माता, बंदिशकार, संगीत विभाग प्रमुख तथा गुरु इन भूमिकाओं से संगीत की सेवा की है और कर रही हैं। इस क्षेत्र में कार्य करनेका डॉ. प्रभा अत्रे जी का लगभग 60-65 साल का प्रदीर्घ अनुभव है। इसलिये उनके विचारों का महत्त्व तथा मूल्य विशेष रूप से हैं। उनका सांगितिक साहित्य हिंदी, अंग्रेजी, कन्नड, गुजराती तथा जापानी भाषा में भी अनुवादित हुआ है। उनकी शिष्या डॉ. नीलिमा जी छापेकर (इंदौर) ने उनकी किताबों का हिंदी अनुवाद किया है। हिंदी में अनुवादित 'सुस्वराली' इस पुस्तक के पृष्ठ क्र.2 के परिच्छेद पर प्रस्तुत शोधपत्र में चर्चा की गई है। इस परीच्छेद में वे लिखती है- "किसी भी संगीत को जानकर, समझकर आनंद लेने में, उस संगीतका स्तर तय करने में उसका सांगीतिक अर्थ समझना आवश्यक है। स्वर, लय की भाषा समझना जरुरी है। अन्यथा केवल व्यक्तिगत पसंद, नापसंद के आधार पर कोई संगीत अच्छा है अथवा नही यह तय किया जायेगा जिससे उस संगीत पर, उस कलाकार पर अन्याय होगा|"

शोध प्रणाली

प्रस्तुत शोधपत्र डॉ. प्रभा अत्रेजी की हिंदी में अनुवादित 'सुस्वराली' इस पुस्तक में समाविष्ट 'संगीत का आकलन' इस लेख के एक परिच्छेद पर आधारित है। यह विषय सामाजिक संशोधन पद्धती पर आधारित है। प्रस्तुत शोधपत्र में डॉ.प्रभा अत्रे जी के पुस्तक और सांगीतिक साहित्य इन लिखित साहित्य का यथोचित प्रयोग किया गया है।

व्याप्ती- मर्यादा

डॉ. प्रभा अत्रे जी द्वारा लिखित साहित्य में संगीत से जुड़े अनेक विषयोंपर उन्होने अपने विचार रखे है। परंतु प्रस्तुत शोधपत्र में 'श्रोता द्वारा संगीत का आकलन' इस विषय पर ही विचार किया गया है। इस विषय तक ही इस शोधपत्र की व्याप्ती है|

संगीत का संबंध प्रत्येक मनुष्य मात्र से हैं। साँस लेना, हृदय का धड़कना आदि मानव शरीर की महत्त्वपूर्ण शारिरीक क्रियाएँ गती से संबंधित है, जिसे संगीतमें हम लय कहते है। अगर ये दोनो ही लयबद्ध स्वरूप में कार्यरत रहते है, तो ही मनुष्य का शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहता है। इस प्रकार मनुष्य जीवनसें संगीत का अटूट संबंध दिखता है। उसी प्रकार अगर देखा जाये तों लगभग सभी मानव जाती का संगीत के प्रति लगाव होता है। संगीत सुनना सबको अच्छा लगता है। संगीत का प्रभाव कम-अधिक मात्रा में हर किसी के मन-मस्तिष्क पर होता ही है। संगीत का समावेश हमारे प्राचीन वैदिक वाङ्मयमे भी हुआ है। हमारे वैदिक वाङ्मय मे चार वेदोंका (जिसे 'ज्ञान राशी' कहा जाता है) अंतर्भाव होता है। इन चार प्रमुख वेदों में से एक, जिसे हम सामवेद कहते है ,उसकी रचना संगीत में बध्द है। यह सम्मान ६४ कलाओं मे सिर्फ संगीतको प्राप्त है । इससे हम संगीत कलाकी व्यापकता का अनुभव तथा उससे मानव जीवन पर होनेवाले गहरे असर की कल्पना कर सकते हैं ।

संगीत कला की नींव जिस तत्त्व पर रखी गई है, वह तत्त्व है 'रंजको जनचित्तानाम्'। अर्थात् संगीत का श्रवण करने पर श्रोता का रंजन हो सके, उसे आनंद मिल सके, वही संगीत है।

संगीत यह श्राव्य कला है। उसका माध्यम ध्वनि है, नाद है । नाद का वास्तविक रूप कंपन युक्त वायु है, जो अत्यंत सूक्ष्म रूप में होती है। सूक्ष्म होने के कारण वह आँखो को दिखती नहीं या हाथ में पकड़कर उसे अनुभव नहीं कर सकते। उसको केवल सुनकर ही अनुभव किया जा सकता है। उसको सुनने पर उसका सीधा परिणाम श्रोता के के मन-मस्तिष्क पर होता है ।"

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

व्यक्ति के मस्तिष्क में जितना संगीत का ज्ञान तथा मन के व्यक्तिगत संस्कार, रुचि, अनुभव इ. के अनुसार ही वह संगीत का आनंद उठा सकता है। श्रोता का संगीत कला का ज्ञान तथा उस ज्ञानके अनुसार उसके संगीत के अनुभव का, आकलन का स्तर कैसे होता है, कैसे होना चाहिये इसके बारेमें चर्चा करना यह इस शोधपत्र का उद्दीष्ट है। इस उद्दिष्ट की पूर्ती हम डॉ. प्रभा अत्रे जी के 'सुस्वराली' इस किताब में किये गये इस कथन की सहायता से करने वाले हैं।

"किसी भी संगीत को जानकर, समझकर आनंद लेने में, उस संगीत का स्तर तय करने में उसका सांगितिक अर्थ समझना आवश्यक है। स्वर लय की भाषा समझना जरुरी है, अन्यथा केवल व्यक्तिगत पसंद, नापसंद के आधार पर कोई संगीत अच्छा है अथवा नहीं, यह तय किया जायेगा जिससे उस संगीत पर, उस कलाकार पर अन्याय होगा."

उक्त परिच्छेद में प्रभा जी ने संगीत के आकलनका उद्देश्य, पात्रता तथा श्रोताकी जिम्मेदारी का तथा श्रोता से क्या अपेक्षा है, इसका निर्देश किया है। संगीत से उत्पन्न हुआ आनंद निश्चित रूपसे वास्तव में स्वरोंका ही आनंद है। स्वर और लय इन दोनों के मिलाप से जो स्थिती निर्माण होती है ,वह आनंद का अनुभव कराती है। संगीत का आनंद हम दो प्रकार से ले सकते है; शब्दों को स्वर,लय में बांधकर या केवल स्वर,लय कि विभिन्न गतिविधियों से। भारतीय संगीत यह संगीत के घटक, रचना और प्रस्तुतीकरण के आधार पर दो प्रकारों में विभाजित हुआ है।

१) शब्द प्रधान तथा २) स्वरप्रधान संगीत.

१) शब्द प्रधान संगीत:- किसी भी शब्दबद्ध तथा गेय रचना को स्वरों की सहायता से या माध्यम से जब प्रस्तुत किया जाता है ,उसको शब्द प्रधान संगीत कहते है। इस संगीत प्रकार में 'शब्द' का महत्त्व अधिक रहता है। शब्दों में समाहित जो भाव / अर्थ होता है उसके अनुरूप उस रचना को स्वर तथा लय में बाँधकर परिणाम कारक बनाया जाता है। इसका उद्देश्य यही होता है की शब्दों में समाहित भावार्थ का संगीत के माध्यम से आनंद लेना। उपशास्त्रीय संगीत, गज़ल, भक्तिगीत, भावगीत, फिल्मी गीत, नाट्यगीत आदि गीत प्रकारों का अंतर्भाव शब्द प्रधान संगीत में किया जाता है। स्वर ,लय के साथ शब्द इसका प्रमुख घटक होता है। इसकी रचना पहले ध्रुवपद और उसके बाद दो या दो से अधिक अंतरे, इस प्रकार की होती है। हर अंतरे के बाद ध्रुवपद गाया जाता है। इसके प्रस्तुतिकरण का कालावधी कम होती है। इन रचनाओ में आलाप तथा तानों का प्रयोग विशेष रुप से नहीं किया जाता।(अपवाद- नाट्य गीत व उपशास्त्रीय संगीत) इन रचनाओ में राग के शुद्ध रूप की अपेक्षा नही होती है।

२) स्वरप्रधान संगीत :- इसमें शास्त्रीय संगीत के रागोंकी बंदिशोंका समावेश होता है। इन बंदिशो में शब्द तो जरूर होते है, लेकिन इन शब्दों का प्रयोग केवल मुखड़ा अर्थात् सम दिखाने के लिए किया जाता है। बाकी राग रूप प्रस्तुत करने के लिये स्वर-लय को ही महत्व दिया जाता है। बोल आलाप तथा बोलतान इस में भी शब्दों का प्रयोग होता है लेकिन ये क्रियाऐं भाव को बढ़ावा देने के लिए नही बल्की स्वर लय की गतिविधियाँ दिखाने के लिए की जाती है। इस संगीत प्रकार का उद्देश्य ही राग का आनंद लेना है, जो एक नियत स्वरों की रचना होती है। इस प्रकार रागवाचक स्वरों के अलग-अलग टुकडे, आलाप, तान, सरगम आदि की मदद से कलाकार राग की एक अलग स्वरसृष्टी का निर्माण करता है। उसके द्वारा वह स्वयं और श्रोता को भी आनंद का अनुभव करवाता है। स्वर और लय इसके प्रमुख दो घटक है| इसकी रचना स्थायी और अंतरा इतनीही होती है। इसके प्रस्तुतीकरण का कालावधी अधिक होने से इसका प्रभाव काफी समय तक दिमाग पर रहता है। इस संगीत में राग कि शुद्धता का ध्यान रखना जरुरी होता है।

संगीत प्रदर्शन करने की कला है। इसका मतलब इसे किसी के सामने प्रस्तुत किया जाना आवश्यक होता हैं। राग प्रस्तुतीकरण में कलाकार को जो आनंद मिलता है, वह आनंद कलाकार, श्रोता के साथ बाँटना चाहता है। श्रोता के साथ यह आनंद बाँट लेने पर ही कलाकार को प्रस्तुतीकरणसे संतुष्टी मिलती है। श्रोता की समझदारी से भरी और समयोचित मिली दाद से कलाकार को

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

प्रसन्नता होती है। जिससे कलाकारको आत्मविश्वास तथा स्फुर्ती मिलती है। श्रोता तथा कलाकारकी दृष्टिसे प्रस्तुतीकरणमें यह क्षण उत्कटता के होते है। ये वही क्षण होते है जहाँ पर कलाकार का मन और श्रोता का मस्तिष्क समान सतह पर आते है। किसी भी प्रस्तुतीकरण में हर कलाकार तथा श्रोता यह अनुभव पाना चाहता है। पर ये कब संभव हो सकता है? किसी भी शास्त्रीय गायन की महफिल में या गाने की प्रस्तुतीकरण में जितनी बार कलाकार को श्रोताओं से दाद मिलती है, वह प्रस्तुतीकरण सफल माना जाता है। लेकीन इसके लिए श्रोता भी समझदार होना आवश्यक है। उसका संगीत कला व शास्त्र का ज्ञान परिपक्व होना चाहिए तथा वह मन-मस्तिष्क से भी खुला, साफ होना चाहिए।

आंकलन के आधारपर श्रोता के स्थूल रुप से 3 वर्ग हो सकते है।

१) सामान्य श्रोता २) मध्यम श्रोता ३) उत्तम श्रोता

१) सामान्य श्रोता:– किसी संगीत कला तथा शास्त्र को अधिक समझे बिना संगीत का आनंद लेने वाला यह एक बड़ा श्रोता वर्ग है। "जो कानों को अच्छा लगता है वही अच्छा संगीत" यह उसकी संगीत विषयक धारणा होती है। इसी धारणा से वह संगीत का आनंद लेता है। इस स्तर के श्रोताको संगीत का आकलन केवल 'जो मन को सुकून दे सके, जो कानोंको मधुर लगे' इस अनुभव तक ही सीमित रहता है। संगीत कला और शास्त्र का ज्ञान अधिक न होते हुए भी वह संगीत का आनंद लेता है। लेकिन यह आनंद बहोत ही स्थूल रूप का होता है , सीमित होता है। यह श्रोता कलाकार को दाद नहीं दे सकता।

२) मध्यम श्रोता:- इसकी संगीत की समझ सामान्य श्रोता की समझ से अधिक होती है। यह स्थिति सामान्य तथा उत्तम श्रोता के मध्य की स्थिति होनेसे इसे मध्यम श्रोता कहा है। इसे संगीत में रुचि होती है। उसे राग ज्ञान, ताल ज्ञान, स्वर ज्ञान आदी बहुत सी बातों की समझ होती है। कौन सा संगीत सुनने में अच्छा लगता है, कौन सा नहीं इसके बारे में उसकी स्वयं की राय भी हो सकती है। उसकी पसंद के अनुसार वह संगीत प्रकार का चयन भी कर सकता है। फिर भी कला और शास्त्र का ज्ञान परिपक्व न होने के कारण वह पूरी तरह से संगीत का आकलन नही कर पाता। लेकीन जहाँ तक उसकी समझ है, उस समझ की सीमित दायरे में वह संगीत का आनंद लेता है। कभी कभी वह दाद भी देता है।

३) उत्तम श्रोता:- जिसका संगीत शास्त्र तथा कला पक्ष का ज्ञान परिपक्व होता है, उसे उत्तम श्रोता कह सकते है। संगीत का परिपक्व ज्ञान होने से उसे राग प्रस्तुती में, कलाकार जो स्वरोंका काम करते है, उस काम के पिछे होनेवाले कार्यकारण भाव का भी ज्ञान उसे होता है। वो संगीत के दोनोंही प्रकारोंसे (शब्द संगीत व स्वर संगीत) आनंद ले सकता है। ऐसे श्रोता से मिली दादसे कलाकारका उत्साह, जोश बढ़ता है। ऐसी दादको कलाकार गंभीरतापूर्वक उतनी ही प्रसन्नता से स्विकार करता है, क्योंकी इसमें कलाकार के सोच की, कला की श्रोता द्वारा ज्ञानपूर्वक की गयी प्रशंसा होती है। यह ऐसा क्षण होता है जब कलाकार ऐसा कुछ गा जाता है, प्रस्तुत कर जाता है जिसमे कलाकार की तैयारी का श्रोता को अंदाजा होता है और जिसे सुनकर श्रोता की भी बुद्धि अचंभित हो जाती है और वह आनंद श्रोता के दिल को छू जाता है। हर कलाकार यह चाहता है की ऐसा समझदार, परिपक्व श्रोता उसे मिले, ताकि अपनी प्रस्तुती में कलाकार और नई नई बातें ला सकें तथा कलाकार जो नई नई बाते लाता है, लायेगा उसका यथोचित मूल्यमापन हो सकें। उसका आनंद दोनो भी मिलकर उठा सकें।

संगीत की प्रस्तुति दोतर्फा क्रिया है। इसलिये श्रोता के बिना वह अधूरी है। सांगीतिक अनुभव प्रस्तुत करनेके लिये जिस प्रकार कलाकार को निरंतर साधनारत रहना पडता है,उसी प्रकार उन सांगीतिक अनुभवोंका एहसास होने के लिये श्रोता को भी अपनी आकलन क्षमता बढ़ानी पडती है। एक परिपक्व श्रोता बनने के लिये श्रोता को भी साधना करती पडती है। एक उत्तम श्रोता वो होता है जिसे संगीत कला और शास्त्र पक्षकी बारीकियों का अभ्यास होता है। वह बहुश्रुत होता है। इसी से उसकी संगीत कला

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

की समझ परिपक्व होती रहती है। इन सभी अनुभवोंकी वजहसे किसी भी कलाकृती का मूल्य मापन करने का अधिकार उसे प्राप्त होता है। लेकिन इस श्रोता को जितना अधिकार है, उतनी जिम्मेदारियाँ भी उसने निभाने की उससे अपेक्षा है। क्योंकी इस श्रोता की जानकारी के अधिकार की वजहसे उसकी रायको कला जगत में मान्यता होती है। जो मध्यम श्रोतागण, सामान्य श्रोतागण होते है, वो इनके राय के पिछे चलते है, उनपर विश्वास रखते है। इसलिए कलाकृतीका मूल्यमापन करते समय बहोत जिम्मेदारीसे करना अपेक्षित है। किसी भी कलाकृती का रस ग्रहण उसे यथार्थ रुपसे करते आना चाहिये। जो बाते अच्छी है वो कैसे अच्छी है? तथा जो बाते अच्छी नही वो क्यों नही है? इसका विश्लेषण उसे भली भाँती करते आना चाहिये। अगर कलाकृति को लेकर श्रोता के मन में कुछ शंका है तो संभव हो सकें तो कलाकार सें चर्चा भी कर लेनी चाहिये।

यह बात बिलकुल स्वाभाविक है की इतना सब कुछ श्रवण करने पर श्रोता की भी खुदकी पसंद-नापसंद हो सकती है। लेकिन वह खुद तक ही सीमित रखना अपेक्षित हैं। उसे जा़हीर करते समय सावधान रहना चाहिये, क्योंकी गुलाब, चमेली, मोगरा ये सब खुशबुदार फूल ही है, लेकिन इन सबका रंग, रूप और खुशबू अलग अलग है। इस विविधता व विशेषताओं को ध्यान में रख कर अगर हम उनका आनंद ले सकते है, तो वह इन फूलों के प्रति न्याय होगा उसी प्रकार हर कलाकार की विशेषताएँ होती है, वो ध्यान में रख कर अगर हम संगीत का आनंद उठा सकते है, तो वह कलाकार के प्रति न्याय पूर्ण होगा। इसके लिये हर कलाकृती का आकलन उसकी विशेषता के साथ एक उत्तम श्रोता को करते आना चाहिये। इसलिये श्रोता को अपनी सोच खुली रखनी चाहिए। संगीत कला के प्रति मनमें आदर, श्रद्धा होनी चाहिये। कलाकार के प्रति, कलाकृती के प्रति भी सम्मान होना चाहिये। कोई पूर्वाग्रह नहीं होना चाहिये। कलाकार के बिना कला का अस्तित्व संभव नही है और श्रोता का संबंध कला से है,उसके व्यक्तिगत जीवन से नहीं, इस बात का ध्यान रखना चाहिये। तभी श्रोता और कलाकार दोनो में एक सांगीतिक संवाद निर्माण हो सकता है। जिसे कलाकार और श्रोता इन दोनो को भी आनंद का अनुभव मिल सकता है|

निष्कर्ष

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष तक पहुंच सकते है की श्रोता को, संगीत प्रेमी को अगर संगीत के प्रति लगाव है, आस्था है, प्रेम है तो वह अपनी समझ को, जानकारी को अधिक समृद्ध करके; अपनी सोच को अधिक खुली करके कलाकार और श्रोता में एक अच्छा समन्वय स्थापित कर, श्रोता संगीत का पूरी तरह से आनंद उठा सकता है साथ ही कलाकार और संगीत कला को भी लाभान्वित कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

१) हिंदी अनुवाद छापेकर,डॉ. निलीमा(2016). सुस्वराली. दिल्ली : बी.आर.रीदम्स पब्लिकेशन
२) हिंदी अनुवाद छापेकर,डॉ. निलीमा(2016). स्वरमयी. दिल्ली : बी.आर.रीदम्स पब्लिकेशन
३) अत्रे, डॉ.प्रभा (2016).एन्लायटनिंग द लिसनर . दिल्ली : बी.आर.रीदम्स पब्लिकेशन
४) अत्रे, डॉ.प्रभा (2016).अलोंग द पाथ ऑफ म्युझिक. दिल्ली : बी.आर.रीदम्स पब्लिकेशन
५) देशमुख, डॉ.श्रीकृष्ण द.(2006). सुखाचा शोध. नागपूर:श्रीकृपा प्रकाशन
६) वसंत. (1997). संगीत विशारद. हाथरस: संगीत कार्यालय
७) संकलक गर्ग, डॉ.लक्ष्मी नारायण (2006). संगीत निबंधावली . हाथरस : संगीत कार्यालय
८) गोडसे, आनंद (2016).संगीत शास्त्र परिचय. पुणे : आनंद म.गोडसे